भजन

तर्ज :– ओ दूर के मुसाफिर

महबूब के इश्क बिन, चौदह तबक विराना रे,
चौदह तबक विराना, झूठा है ये जमाना

1.) दरगाहे अर्श से ये, उम्मत जहाँ में आई
मुतलक मेहर तुम्हारी, पाया इलम ईलाही
बातून बन्दगी से महबूब को रिझाना रे
झूठा है ये जमाना..

2.) संशय रहा ना कोई, अंगना के दिल में बाकी
दुल्हन को प्यारे दूल्हा, दूल्हा को अंगना प्यारी
कथनी नहीं इश्क में और ना कोई तराना रे
झूठा है ये जमाना..

3.) तेरे मिलन की चाह ने ऐसी लगन लगाई
चौदह तबक की साहेबी, विरहा पे वार डारी
इस इश्क के दर्द को क्या समझेगा स्याना रे
झूठा है ये जमाना.